

# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में कौटिल्य के अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता

शानू कुमार\*

सार

कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र एक विशाल ग्रंथ है जिसमें एक राज्य की आंतरिक प्रशासनिक व्यवस्था के साथ-साथ अंतर्राज्य संबंधों और भिन्न-भिन्न विदेशी राज्यों के साथ भिन्न-भिन्न नीतियों व संबंधों का विस्तृत विवरण दिया गया है। अर्थात् इस ग्रंथ से कौटिल्य की समकालीन और भविष्य की विदेश नीतियों का ज्ञान होता है। यद्यपि 'अर्थशास्त्र' में एक सैद्धांतिक राज्य की कल्पना की गई है, तथापि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह भारतीय विदेश नीति निर्धारण में अत्यधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। इसी सैद्धांतिक राज्य को वर्तमान शासन द्वारा व्यवहारिक रूप दिया जा रहा है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में, 'मंडल सिद्धांत' और 'षडगुण्य नीति' के तहत एक राज्य दूसरे राज्य से अपने संबंधों को कैसे निभाता है, का वर्णन किया गया है, जैसे 'संधि' द्वारा आपसी मधुर संबंध स्थापित किए जाए। सम्राट अशोक ने इन संधियों के लिए अहिंसा, बौद्ध धर्म आदि को माध्यम बनाकर श्रीलंका जैसे पड़ोसी राज्यों से संबंध स्थापित किए। वहीं वर्तमान में इन संधियों का दायरा विशाल हो गया है। जैसे वर्ष 2015 में सौर ऊर्जा को माध्यम बनाकर एक अंतर्राष्ट्रीय सौर संगठन (ISA) का निर्माण किया गया, साथ ही इससे विदेशी संबंधों का भी विस्तार हुआ। वर्तमान समय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे बहुत से मुद्दे सामने आए हैं जिनमें भारत अपनी नेतृत्व वाली भूमिका में दिखा है चाहे वो मुद्दे संयुक्त राष्ट्र संघ में उठे हो या किसी बहुसदस्यी संगठनों में, भारत ने उसमें अपना नेतृत्व दिखाया है। हालांकि कई अवसरों पर भारत ने तटस्थ राज्य की भूमिका भी निभाई है। वर्तमान बहुआयामी युग में भारत को अगर नेतृत्व प्रदान करना है, तो इसके लिए अर्थशास्त्र की राज्य की नीतियों को सैद्धांतिकता से व्यवहार रूप में अपनाकर और अधिक प्रासंगिक बनाना होगा।

**मुख्य शब्दावली:** कौटिल्य, अर्थशास्त्र, भारतीय विदेश नीति, षडगुण्य नीति, मंडल सिद्धांत

## 1. प्रस्तावना

कौटिल्य द्वारा अपनी महत्वपूर्ण कृति 'अर्थशास्त्र' को दूसरी सदी ईसा पूर्व और तीसरी सदी ईसवी के बीच संकलित किया गया था। यह ग्रंथ विदेश नीति के संदर्भ में मुख्यतः पड़ोसी राज्यों के साथ मित्रता या शत्रुता को लेकर नीतियाँ व्यक्त करता है। परंतु भारतीय विदेश नीति अधिक उन्नत एवं विकसित है। अतः इन दोनों ही परिप्रेक्ष्यों में विदेश नीति के संदर्भ में कौटिल्य का अर्थशास्त्र दो पृष्ठभूमियों, एक पड़ोसी (शत्रु व मित्र) तथा दूसरा भारत का विश्व गुरु (नेतृत्वप्रदानकर्ता) के रूप में अत्यंत प्रासंगिक है। सोलेटोर के अनुसार प्रचीन भारत की राजनीतिक विचारधाराओं में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य विचारधारा कौटिल्य की विचारधारा है। कौटिल्य वह प्रथम विचारक था, जिसने राजनीतिक बुद्धिमत्ता तथा शासनकला के सिद्धांत को व्यवस्थित एवं स्पष्ट किया। इन सभी सिद्धांतों को एक स्थान पर एकत्रित कर शासनकला के पृथक एवं विशिष्ट विज्ञान की रचना करने का कार्य किया। इस तरह कौटिल्य को शासन कला व कूटनीति का महान प्रतिपादक कहा जा सकता है।

## 2. कौटिल्य का अर्थशास्त्र और वर्तमान भारतीय विदेश नीति

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य की विदेश नीति के लिए मंडल सिद्धांत प्रतिपादित किये गये हैं। यह सिद्धांत कौटिल्य के अर्थशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है। यहां मण्डल का तात्पर्य है 'घेरे' (Circle) अर्थात् यह इस तथ्य पर आधारित है कि सभी पड़ोसी प्राकृतिक शत्रु होते हैं। चूंकि भूमि भौतिक सुधार का स्रोत है तो जाहिर है कि पड़ोसी भी इस भूमि के टुकड़े को प्राप्त करना चाहेंगे। भारत के संदर्भ में ये पड़ोसी चीन और पाकिस्तान हैं जबकि यह भूमि क्रमशः अरुणाचल प्रदेश और कश्मीर हैं। अब चूंकि कौटिल्य का मानना है कि सभी पड़ोसी प्राकृतिक शत्रु हैं तो, वे मातहत भी हैं। इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने षडगुण्य का सिद्धांत/नीति (छः तरह की नीतियाँ) बताई हैं। इनका उपयोग परिस्थितियों के अनुसार किया जाना चाहिए।

कौटिल्य की ये छः नीतियाँ निम्न प्रकार से हैं-

2.1 **संधि:** भारत ने न केवल पड़ोसी राज्यों के साथ बल्कि वैश्विक स्तर पर अनेक संधियाँ की हैं। कुछ संधियाँ अंतर्राष्ट्रीय मंचों के अनुसरण में रहीं तो कुछ द्विपक्षीय। जैसा कि अर्थशास्त्र कहता है कि संधि दो राज्यों के बीच मित्रता का मजबूत आधार हो सकता है। जैसे- सिकंदर महान के भारत पर आक्रमण के समय चन्द्रगुप्त को शिक्षा दी कि पड़ोसी राज्यों से दोस्ती करें ताकि आने वाले शत्रु की शक्ति का सामना किया जा सके। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ये शत्रु वैश्विक समस्याएँ हैं। जैसे कि भूमण्डलीय तापमान, ऊर्जा संकट, खाद्य संकट, आतंकवाद आदि। ऊर्जा संकट की बढ़ती समस्या के मद्देनजर भारत एवं फ्रांस की पहल के वर्ष 2015 में अंतर्राष्ट्रीय सौर संगठन (ISA) का गठन किया गया।

\*पीएच. डी. शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय; Email: [sshanu1002@gmail.com](mailto:sshanu1002@gmail.com)

इसमें भारत ने आगे बढ़कर भागीदारी दर्ज की। इसी प्रकार 2015 के पेरिस समझौते के अंतर्गत भारत ने अपने लक्ष्य भी समय पर निर्धारित कर विश्व में अपनी पहचान को धरातल पर प्रकट किया। मोदी सरकार ने अपने कार्यकाल की शुरुआत से ही पड़ोसियों के साथ मित्रता और सहयोग बढ़ाने को प्राथमिकता दी। वास्तव में उन्हें यह समझ थी कि भारत के लिए एक प्रमुख एशियाई शक्ति बनने के साथ-साथ एक विश्वस्तरीय वैश्विक शक्ति बनने के लिए विशेष रूप से अपने तत्काल प्रबंधन की क्षमता पर निर्भर करता है। पड़ोसी पहले (नेबरहुड फर्स्ट) की अपनी रणनीति में भारत दक्षिण एशिया में चीन की बढ़ती शक्ति के प्रति सतर्क है।

प्रधानमंत्री मोदी ने वास्तव में कौटिल्य के मंडल सिद्धांत को पुनर्जीवित किया है। जहां भारत अपने आप को समीपस्थ और सबसे अधिक स्थिर पड़ोसी होने की दृष्टि में केन्द्र में पाता है। पीएम मोदी ने अपने पहले शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों को आमंत्रित कर अपनी नीति के बारे में पूरी दुनिया को अवगत करा दिया था। मोदी ने तत्कालीन विदेश मंत्री सुष्मा स्वराज के साथ दक्षिण एशिया को अपने पहले विदेशी दौर के लिए गंतव्य के रूप में बताया। इस तरह भूटान मोदी का पहला विदेशी दौर बना जहाँ लगभग दो दशकों में किसी भारतीय पीएम ने दौरा नहीं किया था। बीमस्टेक और (BBIN) जैसे संगठनों ने भी भारतीय विदेश नीति को नया रूप दिया। इन दोनों संगठनों में बांग्लादेश एक प्रमुख द्वार के रूप में उभरा है। बांग्लादेश के साथ 70 साल पुराने क्षेत्रीय मुद्दे पर समझौता कर उसे हल कर लिया गया है। तदुसार ढाका ने दक्षिण एशिया की भू-राजनीतिक स्थिति को बदलने के लिए भारत की उप-क्षेत्रीय पहलु के लिए एक बड़ा रणनीतिक अवसर प्रदान किया। श्रीलंका के साथ रिश्ते उतार-चढ़ाव के रहे हैं। राजपक्षे सरकार ने चीन के साथ विकल्प को चुना। वहीं राष्ट्रपति सिरिसेना ने भारत का विकल्प चुना। सिरिसेना ने फरवरी 2015 में भारत की आधिकारिक यात्रा की। पीएम मोदी पिछले 28 वर्षों में श्रीलंका की व्यक्तिगत यात्रा करने वाले पहले पीएम बने। भारत ने हंबनटोटा जिले में मटाला हवाई अड्डे में भी निवेश किया। अफगानिस्तान के संबंध में मोदी की पड़ोस की कूटनीति अपेक्षाकृत सफल रही है क्योंकि अफगानिस्तान में भारत से नियमित रूप से उच्च स्तर की यात्राएँ होती रही हैं। हालांकि तालीबान की सरकार आने के बाद भारत-अफगानिस्तान रिश्तों में बदलाव आया है। कौटिल्य के यथार्थवाद को, क्षेत्रीय सुरक्षा निहितार्थों को ध्यान में रखते हुए तालीबान तक भारत की हालिया पहुँच से इसे और भी समझा जा सकता है क्योंकि अमेरिका द्वारा अफगानिस्तान से सैनिकों की वापसी से अफगानिस्तान में राजनीतिक बदलाव आया है।

**2.2 विग्रह की नीति:** केवल यही नहीं भारत ने समय आने पर विग्रह की नीति का भी अनुसरण किया। पड़ोसी राज्य चीन (1962), पाकिस्तान (1971,1999,2020) के साथ इस नीति का मुख्यतः अनुसरण किया गया। मैकमोहन रेखा के अनुसार निर्धारित अंतर्राष्ट्रीय सीमा का चीन द्वारा उल्लंघन करने एवं अवसाई चीन व अरुणाचल प्रदेश पर दावा करने पर भारत के साथ 1962 में युद्ध शुरू हुआ। पाकिस्तान द्वारा भी लाहौर बस समझौते (1999) का उल्लंघन करने पर अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारत ने विग्रह किया अर्थात् संधि तोड़ते हुए युद्ध का जवाब दिया और कारगिल पर तिरंगा ध्वज फहराया। पीएम मोदी ने तत्कालीन पाकिस्तानी पीएम नवाज शरीफ से मिलने के काबूल से लौटते समय पाकिस्तान का अचानक दौरा करके भारत-पाक संबंधों में एक नया अध्याय लिखने का भी प्रयास किया लेकिन साड़ी-सॉल और क्रिकेट डिप्लोमेसी तब समाप्त हो गई जब आतंकवादियों ने पठानकोट में एक सैन्य अड्डे पर हमला किया। 2019 में भी पुनः पाकिस्तान द्वारा भारत के ऊरी क्षेत्र में हमला किया गया। इसकी भी कड़ी प्रतिक्रिया करते हुए भारत ने बालाकोट एयर स्ट्राइक की और पाकिस्तान से सभी व्यापारिक, राजनीतिक, वैश्विक संबंधों को तोड़ दिया। पाकिस्तान से अलग पड़ोसी पहले की नीति को जारी रखते हुए भारत ने सार्क माइनस वन अर्थात् पाकिस्तान के बिना, की नई अवधारणा पेश की और पड़ोस नीति को आगे बढ़ाने के लिए बीबीआईएन (बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल) नामक एक नया व्यापार ब्लॉक शुरू किया। बीबीआईएन संधि का तर्क है कि यह चीन की 'वन बेल्ट वन रोड' (ओबीओआर) पहल का भारतीय संस्करण है।

**2.3 आसन:** हाल ही में भारत ने अपने पारंपरिक प्राकृतिक शत्रुओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर घेरने तथा विश्व गुरु के रूप में उभरने के रूप में एक कदम बढ़ाते हुए क्वाड (QUAD) जैसे रणनीतिक, राजनीतिक, सैन्य व अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में शिरकत की। यह संगठन मुख्यतः चीन व उत्तर कोरिया की प्रतिक्रिया में गठित किया गया। हाल में भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मिलकर चीन सीमा के समीप (वास्तविक नियंत्रण रेखा के लगभग 100 किमी. दूर) एक संयुक्त सैन्य युद्धाभ्यास किया गया। दूसरी ओर अरुणाचल प्रदेश एक संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण वहां सामान्यतः ऐसी सैन्य गतिविधियाँ नहीं की जाती हैं। परंतु लद्दाख व उत्तराखण्ड और सिक्किम क्षेत्रों में इस प्रकार की सैन्य अभ्यास सामान्यतः चलते रहते हैं। भारत के पश्चिमी सीमा (पाकिस्तान) पर राजस्थान के जैसलमेर के पोकरण और बीकानेर के महाजन रेज क्षेत्र में शत्रु देश पर दबाव बनाने और वैश्विक पटल पर अपना सामर्थ्य और शक्ति प्रदर्शन के लिए सैन्य अभ्यास किये जाते रहते हैं। हाल में महाजन रेज (बीकानेर) में बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स (BSF) के द्वारा भारतीय सेना का युद्धाभ्यास किया गया। वहीं, 27 नवम्बर 2022 से 11 दिसम्बर 2022 तक भारत और ऑस्ट्रेलिया के मध्य 'AUSTRALIND 2022' का आयोजन किया जा रहा है। एक राज्य द्वारा इस प्रकार की गतिविधियाँ दूसरे राज्य की सीमा के समीप जाकर करने को ही अर्थशास्त्र में आसन की नीति कहा गया है। अर्थात् शत्रु राज्य की सीमा के समीप सेना तैनात करना ताकि एक रणनीतिक व सैन्य दबाव बनाया जा सके।

**2.4 यान:** अर्थशास्त्र में यह भी कहा गया है कि इसी प्रकार का दबाव व शक्ति प्रदर्शन आसन के साथ-साथ यान नीति के तहत भी किया जाना चाहिए। वर्ष 2020 में भारत के लद्दाख क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर भारतीय तिब्बत सीमा सुरक्षा बल (ITBP) और चीनी PLA (PEOPLE'S LIBERATION ARMY) की पश्चिमी थिएटर कमाण्ड के मध्य संघर्ष हुआ जिसमें दोनों ओर से अनेक सैनिक शहीद हुए। प्रतिक्रिया स्वरूप भारत व चीन के मध्य राजनीतिक, सैन्य, व्यापारिक संबंधों में दरार आ

गई। किंतु वर्तमान सरकार के उत्कृष्ट नेतृत्व में कौटिल्य की षडगुण्य में से एक यान नीति को अपनाते हुए चीन पर सैन्य दबाव बनाया गया। अर्थात् यान नीति कहती है कि सैन्य टुकड़ियों को सक्रिय रखा जाए। इसी क्रम में बड़ी संख्या में विदेशी सेनाओं के रूप के साथ युद्ध अभ्यास किए गए। भारत-चीन सीमा पर सेना की आवाजाही बढ़ा दी गई। ब्लूमबर्ग के अनुसार इस तारीख तक भारत-चीन सीमा पर लगभग 50,000 सैन्य बल तुरंत प्रभाव से भेजे जा चुके थे।

पाकिस्तान के साथ भी इसी प्रकार के नकारात्मक संबंधों की एक कड़ी रही है। पाकिस्तान के प्रति अत्यधिक आक्रामक मुद्रा के अलावा मोदी ने अफगानिस्तान और ईरान में निवेश करके, सफलतापूर्वक एससीओ (संघाई सहयोग संगठन) में शामिल होकर, सऊदी अरब के साथ अच्छे संबंध बनाकर, कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की नीति को लागू करने की क्षमता को प्रदर्शित किया है।

**2.5 समाश्रय:** अर्थशास्त्र के समाश्रय नीति के अनुसार समान उद्देश्यों वालों के साथ दोस्ती करनी चाहिए। अर्थशास्त्र संभवतः सीमाओं और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पड़ोस की नीति और रणनीतियों का पहला व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह अपनी सुरक्षा को पड़ोसी राज्यों के भीतर विकास से अलग नहीं कर सकता। भारत की गुटनिरपेक्ष नीति को भारत कई भू-राजनीतिक स्थिति को दर्शाती एक यथार्थवादी नीति के रूप में सराहा गया जो किसी अन्य राष्ट्र के साथ स्थायी शत्रुता या मित्रता में फंसने की बजाय स्वहित का पालन करने की कौटिल्य की सलाह को प्रतिध्वनित करता है। भारत व रूस सदियों से गहरे मित्र रहे हैं। भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान भी रूस द्वारा दोस्ती का अच्छा उदाहरण विश्व के सामने रखा गया। भारत ने भी अनेक अवसरों पर रूस का साथ दिया। 24 फरवरी 2022 को रूस व यूक्रेन के बीच संघर्ष प्रारंभ हुआ। जहां इस संघर्ष में पूरा संसार शीतयुद्ध कालीन तीन गुटों के बजाय (शीत युद्ध के दौरान संसार तीन गुटों में बँट गया था, पश्चिमी देश (नाटो), पूर्वी देश (वर्साय) और दोनों में से किसी भी गुट में शामिल न होने वाले (गुटनिरपेक्ष)), दो प्रमुख गुटों में बँटा रहा। 2022 की इस घटना के दौरान विश्व या तो अमेरिका के साथ या रूस के साथ रहा। अधिकांश देश अमेरिका के साथ ही थे। इसी दौरान रूस पर पश्चिमी देशों के संगठनों नाटो और यूरोपियन यूनियन द्वारा रूस पर अनेक आर्थिक प्रतिबंध लगाये गये। परंतु भारत ने अपनी रणनीतिक नीतियों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन करते हुए रूस से व्यापारिक संबंध और मित्रता को जारी रखा। यह भारत के विश्व गुरु बनने की ओर बढ़ते प्रयासों का ही एक फल था कि विश्व के शक्तिशाली देश भी भारत को ऐसा करने से नहीं रोक सके। जहां अमेरिका द्वारा रूस पर निरंतर प्रतिबंध लगाए जा रहे थे और अन्य देशों से रूस के साथ सभी प्रकार के व्यापारिक संबंध समाप्त करने पर जोर दिया जा रहा था, वहीं भारत ने इन दबावों में न आते हुए रूस से व्यापारिक संबंधों को जारी रखा, विशेषकर कच्चे तेल का व्यापार। हालांकि रूस द्वारा भारत को इसके लिए मूल्यों में रियायतें भी दी गईं।

दूसरी ओर भारत ने अमेरिका के साथ भी संबंध नहीं तोड़े, न ही अमेरिका और अन्य शक्तिशाली नाटो देश ऐसा कर पाए। क्योंकि भारत और इन सभी के हित व उद्देश्य समान हैं। दूसरा भारत बदलती छवि के कारण भी ये शक्तिशाली देश भारतीय नीतियों को अधिक प्रभावित नहीं कर सके। अर्थात् कौटिल्य को शायद भविष्य का भी ध्यान था कि अगर भारत को विश्वगुरु बनना है तो इन नीतियों को अपनाना ही होगा और इन्हीं में से एक थी समाश्रय की नीति। हालांकि तत्कालीन समय में भारत शिक्षा, संस्कृति, व्यापार आदि में विश्वगुरु था किंतु कौटिल्य भारत को एक अखण्ड भारत बनाना चाहते थे वहीं वर्तमान में भारत विश्वगुरु बनना चाहता है ताकि वह विश्व का नेतृत्व कर सके। भारत न केवल उपमहाद्वीप में अपनी सुरक्षा और रणनीतिक हितों की रक्षा करेगा बल्कि उन घटनाओं के प्रति भी संवेदनशील होगा, जिनका भारत पर प्रभाव पड़ा या पड़ सकता है।

**2.6 द्वैद्वाभाव-** यद्यपि अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने द्वैद्वाभाव की नीति का भी उल्लेख किया है। जिसके अनुसार दोहरी नीति अपनानी चाहिए, अर्थात् एक समय में एक के साथ दोस्ती और दूसरे के साथ शत्रुता। अन्य पाँच षडगुण्य नीतियों की भांति यह भी वर्तमान भारतीय विदेश नीति में प्रासंगिक है। वर्तमान बहुआयामी युग में सभी के साथ एक-समान व्यवहार नहीं किया जा सकता है। जैसे भारत के उपमहाद्वीप में भूटान, नेपाल के साथ दोस्ती अच्छी है, वहीं चीन व पाकिस्तान शत्रुओं की सूची में शामिल हैं। बढ़ते आत्म विश्वास और क्षमता के साथ भारत ने स्वयं के हितों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता को महसूस किया और दक्षिण एशिया को प्रतिद्वंद्वी चीन के क्षेत्रीय दावों से बचाना शुरू किया। कौटिल्य की भाषा का प्रयोग करते हुए भारत ने मंडल सिद्धांतों को आगे बढ़ाना शुरू किया, जैसे “पूर्व की ओर देखो नीति” से स्पष्ट है। भारत ने दक्षिण एशिया में सार्क संगठन का गठन किया।

भारत ने वास्तविक राजनीति के आधार पर पूर्वी एशिया में चीन के स्थानीय प्रतिद्वंद्वियों के साथ मजबूत मित्रता संबंध स्थापित किए। भारत ने विश्व को संकेंद्रित वृत्तों (सर्किल ऑफ स्टेट्स) के माध्यम से देखना शुरू किया। पहला सर्किल दक्षिण एशिया, दूसरा एशिया और हिन्द महासागर के तट पर फैले विस्तारित पड़ोस और तीसरा पूरे वैश्विक मंच को शामिल करता है। दक्षिण एशिया में पड़ोस के लिए आई. के. गुजराल ने “गुजराल सिद्धांत” के रूप में जानी जाने वाली प्रसिद्ध नीति की घोषणा की।

अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने देश को परमाणु हथियार दिए और इसकी तैयारी कर युद्ध से बचने की राजनीति को समझा। इसे उनके कार्यकाल के दौरान तत्कालीन विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने विस्तारित पड़ोस की धारणा को लोकप्रिय बनाया। वाजपेयी का एक कथन बहुत ही प्रसिद्ध है कि “दोस्त बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं।” डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान, वैश्विक स्तर पर भारत की प्रोफाइल एक उभरती हुई शक्ति के रूप में मौलिक रूप से बढ़ी। पं. नेहरू से लेकर डॉ. महमोहन सिंह तक, कौटिल्य और उनके अर्थशास्त्र ने एक अटल रणनीतिक मार्गदर्शक के रूप में काम किया है। प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में उन्होंने एक यथार्थवादी विदेश नीति का पालन किया है और अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में विदेशी मामलों में अधिक ऊर्जा समाहित की है। भारत को एक महाशक्ति बनाने की उनकी महत्वाकांक्षा कौटिल्य के समान है।

31 अक्टूबर 2014 को मोदी ने “सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता दिवस” लांच किया, जिसने कौटिल्य के लिए उनके उत्साह को और अधिक प्रदर्शित किया क्योंकि उन्होंने स्पष्ट रूप से कौटिल्य के साथ पटेल की बराबरी करते हुए कहा कि, ‘सदियों पहले कौटिल्य ने एक मजबूत सेट स्थापित करने का एक सफल प्रयोग किया था, छोटी-छोटी रियासतों को एकजुट करके वही महान कार्य उस व्यक्ति ने किया है जिसकी आज हम जयंती मना रहे हैं।’ पीएम मोदी ने नवम्बर 2014 में “एक्ट ईस्ट नीति” के अपने अधिक मजबूत संस्करण के साथ पूर्व की ओर देखो नीति को बदलकर चीन की विस्तारवादी मानसिकता के उद्देश्य से विस्तारित पड़ोस की अवधारणा में एक नया जीवन डालने की भी कोशिश की है।

भारत पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया में अधिक सक्रिय और प्रमुख रणनीतिक भूमिका निभाने के लिए तेजी से इच्छुक रहा है। मोदी भारत को कौटिल्यन विजिनिशु (जीत की इच्छा रखने वाले) के रूप में देख रहे हैं। साथ ही उन्होंने वियतनाम, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अन्य पूर्वी एशियाई राज्यों के साथ घनिष्ठ आर्थिक और रक्षा जुड़ाव स्थापित करके चीन की रणनीति को चुनौती रही है। इसके अलावा अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत का व्हाइ राज्यों के अर्थशास्त्रीय सर्कल की भू-राजनीतिक अभिव्यक्ति है। इसलिए यह घोषित करना शायद ही अतिशयोक्ति होगी कि कौटिल्य की कूटनीति पीएम मोदी के नेतृत्व में फिर से जीवंत हो गई, यह कूटनीति पाकिस्तान और चीन के प्रति बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है।

### 3. निष्कर्ष

लेख में आधुनिक भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में कौटिल्य के अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता की जाँच की है। अंतर्राष्ट्रीय संबंध के विषय में कौटिल्य की महान रचना ‘अर्थशास्त्र’ एक उल्लेखनीय गैर-यूरोपीय यथार्थवादी क्लासिक है। कौटिल्य ने यथार्थवाद के मूल विचारों और अवधारणाओं पर पश्चिम के जानने से बहुत पहले चर्चा की थी। कौटिल्य के यथार्थवाद का अंदाजा मौर्य साम्राज्य की स्थापना से लेकर पूरे उपमहाद्वीप और उसके बाहर से लगाया जा सकता है। राष्ट्रीय हित की प्रधानता, विदेश नीति, साथ ही अन्य बातों के साथ-साथ गठबंधनों और स्वयं सहायता के माध्यम से शक्ति की गतिशीलता का संतुलन तथा इनका प्रभाव भारत की कूटनीति में बहुत अधिक गहराई देता है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र तेजी से उन विद्वानों के लिए बौद्धिक प्रेरणा का स्रोत बन गया है जो विशेष रूप से भारतीय अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सिद्धांतीकरण की संभावनाओं की खोज में रुचि रखते हैं। अर्थशास्त्र की उदार व्याख्या न केवल समकालीन पश्चिमी अंतर्राष्ट्रीय संबंध में मौजूद बारीकियों को पूरा करती है बल्कि सिद्धांतीकरण की प्रक्रिया पर पश्चिमी आधिपत्य को भी चुनौती देता है। भारत ने विकसित विश्व व्यवस्था में एक उभरती हुई शक्ति की छवि प्राप्त की है, इस छवि को बनाए रखने के लिए एक आधार तैयार करने की आवश्यकता सर्वोपरि हो गई है। चूंकि कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीतिक परिवर्तन और ऐतिहासिक परिवर्तन के कारक के रूप में शक्ति संतुलन में बदलाव से संबंधित है, इसलिए इसका पुनर्निर्माण भारत की “बढ़ती शक्ति” की स्थिति का समर्थन करने के लिए मजबूत आधार पैदा करने में मदद कर सकता है।

### संदर्भ सूची

अर्शिनद इकबाल दार, बियॉंड यूरोसेंट्रिज्म: कौटिल्याज रियलिज्म एण्ड इण्डियाज रीजनल डिप्लोमेसी, ह्यूमिनिटीज एण्ड सोशल साइंसेज कम्युनिकेशन्स, 2021.

दीपशिखा शशि, अर्थशास्त्र बियॉंड रियल-पॉलिटिक द ‘इलेक्ट्रिक’ फेस ऑफ कौटिल्य, रिसर्च गेट, 2014.

द टाइम्स ऑफ इण्डिया, “कौटिल्य (चाणक्य) इन इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी”, 23 जून 2021.

साउथ चायना मॉर्निंग पोस्ट, 30 जून 2022.

ब्लूमबर्ग.कॉम

प्रवीन चन्द्रशेकरन, “कौटिल्य: पॉलिटिक्स, एथिक्स एण्ड स्ट्रेटेजी”, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, मई 2006.

कौटिल्याज अर्थशास्त्र: बुक- 3, “द एण्ड ऑफ द सिक्स-फॉल्ड पॉलिसी”, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी

डॉ. मणिशंकर प्रसाद, कौटिल्य के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली, 1998.

वाचस्पति गैरोला, कौटिल्य अर्थशास्त्र, चौखम्बा रोड, वाराणसी